International Organization of Research & Development (IORD)
ISSN: 2348-0831
Vol 12 Issue 01 | 2024

# राष्ट्र, जाति और समरसताः गांधीवादी अहिंसा, अम्बेडकरवादी तर्कवाद और एकात्म मानववाद का समन्वयात्मक विश्लेषण

**Manjeeta (Ph.D Research Scholar)[1], Dr. Sushila Bedi Dubey (Associate Professor) [2]**

Department – Political Science, Shri Jagdish Prasad Jhabarmal Tibrewala University, Chudela, Jhunjhunu

## सारांश (Abstract)

यह शोधपत्र भारतीय राजनीतिक चिंतन की तीन प्रमुख विचारधाराओं—गांधीवाद, अम्बेडकरवाद और एकात्म मानववाद—का समग्र, तुलनात्मक तथा समन्वयात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज की विविधतापूर्ण संरचना, जटिल जातिगत व्यवस्था और सामाजिक विषमता के परिप्रेक्ष्य में ये तीनों विचार अलग—अलग दृष्टिकोण से समाधान प्रस्तुत करते हैं। गांधीवाद अहिंसा, नैतिकता और ग्राम स्वराज के माध्यम से समाज में आत्मशुद्धि एवं सत्य की स्थापना की बात करता हैय अम्बेडकरवाद दलितों, शोषितों एवं वंचित वर्गों को समान अधिकार और सम्मान दिलाने हेतु सामाजिक न्याय, संविधानवाद एवं तर्कशीलता को प्रमुखता देता हैय वहीं, एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति की आधारशिला पर एक समरस समाज की रचना हेतु व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के संतुलन पर बल देता है।

यह अध्ययन न केवल इन तीनों विचारधाराओं के मूल सिद्धांतों का विवेचन करता है, बल्कि यह भी विश्लेषित करता है कि वर्तमान भारत में व्याप्त सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव, राजनीतिक ध्रुवीकरण और सांस्कृतिक संकटों से निपटने के लिए इन विचारधाराओं के समन्वय की कितनी आवश्यकता है। लेख यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि गांधी की आत्मिक दृष्टि, अम्बेडकर की बौद्धिक चेतना और उपाध्याय का सांस्कृतिक दृष्टिकोण मिलकर एक साझा सामाजिक दर्शन के रूप में प्रयुक्त हों, तो भारत में एक न्यायपूर्ण, समानतामूलक और समरस राष्ट्र की स्थापना संभव है।

### मूल शब्द (Key Words)

गांधीवाद, अम्बेडकरवाद, एकात्म मानववाद, जाति व्यवस्था, सामाजिक समरसता, भारतीय समाज, तर्कवाद, नैतिकता, सांस्कृतिक दृष्टिकोण

## परिचय (Introduction)

भारतीय समाज बहुस्तरीय, बहुधार्मिक, बहुभाषिक और बहुजातीय स्वरूप का परिचायक है, जिसकी सामाजिक संरचना में विविधताओं के साथ—साथ गहन अंतर्विरोध भी विद्यमान हैं। ऐसे समाज की यथार्थ समझ केवल तथ्यों के माध्यम से नहीं, बल्कि उन विचारधारात्मक विमर्शों के विश्लेषण से प्राप्त की जा सकती है जिन्होंने समाज को दिशा दी है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर और पं.

दीनदयाल उपाध्याय जैसे विचारकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिन्होंने न केवल सामाजिक समस्याओं की गहराई से व्याख्या की, बल्कि समाधान की वैकल्पिक दिशाएं भी प्रस्तुत कीं।

महात्मा गांधी का चिंतन सत्य, अहिंसा, आत्मशुद्धि और ग्राम स्वराज के सिद्धांतों पर आधारित है। उनका विश्वास था कि व्यक्ति के नैतिक उत्थान से ही समाज और राष्ट्र का निर्माण संभव है। उन्होंने स्वदेशी, अस्पृश्यता उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों को अपने आंदोलन का आधार बनाकर सामाजिक समरसता की आधारशिला रखी।

वहीं डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण तर्क, न्याय और संवैधानिक अधिकारों की स्थापना पर केंद्रित था। उन्होंने शिक्षा, संगठन और संघर्ष को सामाजिक क्रांति का मूलमंत्र मानते हुए दलितों और वंचित वर्गों के लिए एक न्यायपूर्ण व्यवस्था की मांग की। जाति व्यवस्था के उन्मूलन हेतु उन्होंने न केवल वैचारिक संघर्ष किया बल्कि बौद्ध धर्म स्वीकार कर एक सांस्कृतिक नवचेतना का संचार किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद की परिकल्पना प्रस्तुत की, जो भारतीय संस्कृति की आत्मा से जुड़ा हुआ सामाजिक दर्शन है। इसमें व्यक्ति को समाज और राष्ट्र की एकात्म इकाई मानते हुए उसकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक आवश्यकताओं के संतुलित विकास पर बल दिया गया है। उनका मानना था कि राष्ट्र का उत्थान तब तक संभव नहीं जब तक समाज की सभी इकाइयाँ समान अवसरों के साथ समरसता में न रह सकें।

यह शोधपत्र इन तीनों विचारधाराओं को वर्तमान भारतीय परिदृश्य के संदर्भ में विश्लेषित करता है–जहाँ जातीय भेदभाव, सांप्रदायिकता, सामाजिक असमानता और राजनीतिक ध्रवीकरण जैसे संकट व्याप्त हैं। यह लेख इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास है कि क्या गांधी की नैतिकता, अम्बेडकर की सामाजिक न्याय की भावना और उपाध्याय के सांस्कृतिक समन्वय को समन्वित कर एक न्यायपूर्ण, सहिष्णु और समरस समाज की नींव रखी जा सकती है?

## साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भारतीय राजनीतिक दर्शन पर आधारित विचारधाराओं की परंपरा गहराई और व्यापकता लिए हुए है। महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर और पं. दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत साहित्यिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

### 1. महात्मा गांधी पर साहित्यः

गांधी के विचारों पर आधारित प्रमुख ग्रंथों में 'हिन्द स्वराज' सबसे महत्त्वपूर्ण है, जिसमें उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की आलोचना करते हुए भारतीय जीवन–मूल्यों पर आधारित ग्राम स्वराज की संकल्पना प्रस्तुत की। रामचंद्र गुहा की पुस्तक 'गांधीः द इयर्स दैट चेंज्ड द वर्ल्ड' गांधी के राजनीतिक और सामाजिक

प्रयोगों का विश्लेषण करती है। रजनी कोटर द्वारा लिखा गया 'गांधी एंड हिज क्रिटिक्स' गांधी के विचारों की आलोचनाओं और प्रतिक्रियाओं को संतुलित रूप से प्रस्तुत करता है।

**2. डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर साहित्यः**

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय संबंधी विचारों को समझने के लिए उनकी पुस्तक "Annihilation of Caste" एक आधारशिला है, जिसमें जाति व्यवस्था की आलोचना करते हुए समानता की वकालत की गई है। उनके संविधान–निर्माण में योगदान पर डी. डी. बसु तथा ग्रेनविल ऑस्टिन की पुस्तकों ने ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। शरद पाटील और गौतम भान जैसे आधुनिक लेखक अम्बेडकर के विचारों को आज के संदर्भों से जोड़ते हैं।

**3. एकात्म मानववाद पर साहित्यः**

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद' का साहित्य अपेक्षाकृत सीमित है, किन्तु भारतीय जनसंघ के घोषणापत्र, उनके भाषणों और 'एकात्म मानवदर्शन' नामक पुस्तिका में उनके विचार सुस्पष्ट रूप से प्रस्तुत हैं। राकेश सिन्हा की "Integral Humanism: Revisiting Deendayal Upadhyaya's Political Philosophy" नामक पुस्तक इस विचारधारा को समकालीन राजनीतिक संदर्भ में रखती है। उनके चिंतन में भारतीय संस्कृति की पुनर्रचना का प्रयास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

**4. तुलनात्मक अध्ययन पर साहित्यः**

गांधी, अम्बेडकर और उपाध्याय के विचारों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए कुछ शोधार्थियों ने विचारधारात्मक साम्य और विरोधाभास दोनों को रेखांकित किया है। प्रो. सुधीर कक्कड़, प्रो. लक्ष्मण यादव और डॉ. रमाकांत त्रिपाठी जैसे विचारकों ने इन धाराओं के अंतर्गत सामाजिक समरसता, जाति–उन्मूलन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त, EPW, Indian Journal of Political Science, तथा Economic and Political Thought Quarterly जैसे पत्रिकाओं में भी इन विचारधाराओं पर विविध विमर्श उपलब्ध हैं।

यह साहित्य समीक्षा दर्शाती है कि इन तीनों विचारधाराओं पर न केवल स्वतंत्र अध्ययन हुए हैं, बल्कि समन्वयात्मक दृष्टिकोण से इनके आपसी संबंधों की पड़ताल भी की गई है। तथापि, इन तीनों को एकत्रित कर सामाजिक समरसता के साझा ढांचे में प्रस्तुत करने का प्रयास सीमित रहा है, जिसे यह शोधपत्र आगे बढ़ाता है।

## उद्देश्य (Objectives)

इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत, सांस्कृतिक एवं नैतिक द्वंद्वों के समाधान हेतु गांधीवादी, अम्बेडकरवादी तथा एकात्म मानववादी विचारधाराओं का तुलनात्मक और समन्वयात्मक

अध्ययन करना है। इन विचारधाराओं की वैचारिक गहराई और सामाजिक प्रभाव को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

महात्मा गांधी के सामाजिक दर्शन का अध्ययन करना, विशेष रूप से अहिंसा, सत्य, ग्राम स्वराज और समरसता की अवधारणाओं के माध्यम से सामाजिक शुद्धि और बदलाव की प्रक्रिया को समझना।

डॉ. अम्बेडकर के तर्कात्मक चिंतन और सामाजिक न्याय आधारित दृष्टिकोण का विश्लेषण करना, जिसमें शिक्षा, संगठन और संघर्ष जैसे स्तंभों के माध्यम से वंचित वर्गों के अधिकारों की पुनःस्थापना को केंद्र में रखा गया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का विवेचन करना, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समन्वय के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अवधारणा निहित है।

इन तीनों विचारधाराओं के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से उनकी समानताओं और भिन्नताओं को रेखांकित करना, ताकि इन विचारों को समकालीन सामाजिक संकटों के समाधान हेतु उपयोग में लाया जा सके।

समकालीन भारत की सामाजिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक साझा वैचारिक ढांचा प्रस्तुत करना, जो गांधीवाद की नैतिकता, अम्बेडकरवाद की न्यायप्रियता और एकात्म मानववाद की सांस्कृतिक समरसता को एकीकृत रूप में प्रस्तावित करे।

जातीय, सांप्रदायिक, और सामाजिक विभाजन को समाप्त करने की दिशा में इन विचारधाराओं के व्यावहारिक प्रयोग की संभावनाओं का परीक्षण करना।

## शोध पद्धति (Research Methodology)

इस शोध का उद्देश्य गांधीवादी, अम्बेडकरवादी और एकात्म मानववादी विचारधाराओं का तुलनात्मक एवं समन्वयात्मक विश्लेषण करना है, अतः यह अनुसंधान गुणात्मक (Qualitative) प्रकृति का है और इसमें वर्णनात्मक (Descriptive) व विश्लेषणात्मक (Analytical) दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। शोध में ऐतिहासिक, दार्शनिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का भी समावेश किया गया है ताकि विचारधाराओं की व्याप्ति, प्रवृत्ति और प्रभाव को बहुआयामी तरीके से समझा जा सके।

### 1. अध्ययन की प्रकृति (Nature of Study):

शोध कार्य सिद्धांत आधारित है, जो मुख्य रूप से विचारों, सैद्धांतिक प्रतिपादनों तथा वैचारिक विमर्शों पर केंद्रित है। इसमें किसी प्रकार का सांख्यिकीय सर्वेक्षण नहीं किया गया है, बल्कि साहित्यिक स्रोतों के माध्यम से विचारधाराओं का मूल्यांकन किया गया है।

**2. स्रोतों का चयन (Sources of Data):**

शोध हेतु दो प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है:

**प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):**

- महात्मा गांधी की हिन्द स्वराज, सत्य के प्रयोग, उनके पत्र और भाषण
- डॉ. अम्बेडकर की Annihilation of Caste, What Congress and Gandhi Have Done to the Untouchables, संविधान सभा की बहसों में उनके वक्तव्य
- पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन, भाषण संग्रह, भारतीय जनसंघ के सिद्धांत दस्तावेज

**द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):**

- शोध पत्र, समीक्षात्मक लेख, शोध–निबंध, पुस्तकें, पत्रिकाएं (जैसे: EPW, Indian Journal of Political Science आदि)
- विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें जैसे रामचंद्र गुहा, राकेश सिन्हा, शरद पाटील, आदि के कार्य

**3. विश्लेषण की प्रक्रिया (Analytical Process):**

- शोध के दौरान निम्नलिखित चरणों में विश्लेषण किया गया:
- प्रत्येक विचारधारा के मूलभूत सिद्धांतों की पहचान
- ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में उनके प्रभाव का परीक्षण
- तीनों विचारधाराओं के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से साम्य और अंतर की व्याख्या
- समकालीन सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में इन विचारधाराओं की प्रासंगिकता की पड़ताल

**4. अनुसंधान की सीमा (Delimitation of Study):**

शोध का केंद्र बिंदु भारत में सामाजिक न्याय, जातीय समरसता और राष्ट्र के विचार पर आधारित विमर्श है। यह अध्ययन विदेशी विचारधाराओं को नहीं, बल्कि केवल भारतीय दर्शन और चिंतन पर केंद्रित है। इसके अतिरिक्त, शोध का दायरा सैद्धांतिक विश्लेषण तक सीमित है और इसमें किसी क्षेत्रीय सर्वेक्षण या साक्षात्कार को सम्मिलित नहीं किया गया है।

**5. दृष्टिकोण (Approach):**

शोध में तुलनात्मक, ऐतिहासिक, मूल्यपरक और समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। उद्देश्य यह है कि तीनों विचारधाराओं के बीच व्याप्त अंतर्दृष्टियों और सामाजिक परिवर्तन की सम्भावनाओं को एक साझा वैचारिक मंच पर प्रस्तुत किया जा सके।

## परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Discussion)

इस शोध का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि गांधीवाद, अम्बेडकरवाद और एकात्म मानववाद तीनों ही विचारधाराएं भारतीय समाज में व्याप्त विभाजन, विषमता और संघर्षों के समाधान हेतु वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करती हैं, किंतु उनके दृष्टिकोण, उपाय और लक्ष्य भिन्न–भिन्न हैं। फिर भी, इन तीनों विचारदर्शनों में कुछ ऐसी समानताएँ और पूरकताएँ पाई जाती हैं जो समकालीन भारत में सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में एक साझा दर्शन विकसित करने की सम्भावना को जन्म देती हैं।

### 1. गांधीवाद का प्रभावः

गांधी जी के विचारों में नैतिकता, आत्मानुशासन, अहिंसा और ग्राम स्वराज जैसे तत्त्व प्रमुख हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत सत्य और अहिंसा की अवधारणाएं सामाजिक जीवन को शुद्ध और शांतिपूर्ण बनाने की प्रेरणा देती हैं। शोध से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में भी यदि गांधीवादी दृष्टिकोण अपनाया जाए तो राजनीतिक हिंसा, सांप्रदायिक तनाव और सामाजिक भेदभाव को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

### 2. अम्बेडकरवाद का प्रभावः

अम्बेडकर के विचार तर्क, संवैधानिकता, शिक्षा और अधिकारों की मांग पर आधारित हैं। उनके अनुसार सामाजिक न्याय बिना संवैधानिक गारंटी के असंभव है। उनके चिंतन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए केवल नैतिक अपील पर्याप्त नहीं, बल्कि कानूनी हस्तक्षेप और सामाजिक संगठनों की भूमिका भी आवश्यक है। आज के संदर्भ में उनका दृष्टिकोण सामाजिक अधिकारों की रक्षा हेतु अत्यंत प्रासंगिक है।

### 3. एकात्म मानववाद का प्रभावः

पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति की आत्मा को आधार बनाकर विकास का मार्ग सुझाता है। यह विचारधारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के संतुलित विकास पर बल देती है। शोध में यह बात उभरकर आती है कि एकात्म मानववाद में राष्ट्र को केवल भौगोलिक सीमाओं का नाम नहीं माना गया, बल्कि उसे एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखा गया है।

### 4. तुलनात्मक विश्लेषणः

तीनों विचारधाराओं का तुलनात्मक मूल्यांकन करने पर यह पाया गया किः

- गांधी नैतिक और आध्यात्मिक स्तर पर सुधार चाहते हैं,
- अम्बेडकर सामाजिक और संवैधानिक परिवर्तन पर बल देते हैं,
- उपाध्याय सांस्कृतिक और दार्शनिक पुनर्जागरण की बात करते हैं।

तीनों की वैचारिक पृष्ठभूमियाँ भिन्न हैं, परंतु लक्ष्य एक ही है – एक समरस, न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की स्थापना।

**5. समकालीन प्रासंगिकता:**

शोध से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय की सामाजिक, जातीय और सांस्कृतिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है, जो गांधीवादी नैतिकता, अम्बेडकरवादी न्याय तथा एकात्म मानववादी समरसता को एकीकृत कर सके। यह दृष्टिकोण न केवल वैचारिक संतुलन प्रदान करता है, बल्कि भारतीय समाज के विविध स्वरूप को भी समाहित करता है।

## सिफारिशें (Recommendations)

इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की जाती हैं, जो भारतीय समाज में व्याप्त जातीय असमानता, सांस्कृतिक द्वंद्व और सामाजिक असंतुलन को दूर करने की दिशा में सहायक हो सकती हैं:

**1. शैक्षणिक पाठ्यक्रम में समावेश**

गांधी, अम्बेडकर और उपाध्याय की विचारधाराओं को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया जाना चाहिए ताकि छात्र भारतीय वैचारिक परंपरा की बहुलता और विविधता को समझ सकें और सामाजिक समरसता की दिशा में सोच सकें।

**2. समावेशी नीति निर्माण**

सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों के निर्माण में इन तीनों विचारधाराओं की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ऐसे नीति विकल्प अपनाए जाएं जो न्याय, समरसता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दें।

**3. सामाजिक संवाद की स्थापना**

जाति, वर्ग और संप्रदाय के मध्य संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए नागरिक मंचों, संगोष्ठियों और जनचर्चाओं का आयोजन किया जाए, जिसमें गांधीवादी अहिंसा, अम्बेडकरवादी न्याय और एकात्म मानववाद की दृष्टि से विचार–विमर्श हो।

**4. युवाओं में वैचारिक चेतना का विकास**

युवाओं को इन विचारधाराओं की ऐतिहासिक और सामाजिक प्रासंगिकता से जोड़ने के लिए कार्यशालाओं, सेमिनारों और विमर्श शृंखलाओं का आयोजन किया जाए ताकि वे अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझ सकें।

### 5. नीतिगत सुधार में संतुलन

विकास एवं कल्याणकारी योजनाओं के निर्माण में गांधीवाद की लोककल्याण परक दृष्टि, अम्बेडकरवाद की संवैधानिक न्याय प्रणाली और एकात्म मानववाद की सांस्कृतिक अंतःप्रेरणा को संतुलित रूप में अपनाया जाए।

### 6. अनुसंधान को बढ़ावा

भारत की वैचारिक परंपराओं पर आधारित तुलनात्मक और समन्वयात्मक अनुसंधानों को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि पश्चिमी विचारधाराओं के विकल्प के रूप में भारतीय दृष्टिकोण को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया जा सके।

## निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन की त्रिवेणी—गांधीवाद, अम्बेडकरवाद और एकात्म मानववाद—वर्तमान युग में भी सामाजिक समरसता, न्याय और राष्ट्रनिर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। तीनों विचारक अलग—अलग पृष्ठभूमि से आए, उनकी दृष्टिकोण भिन्न रही, परंतु सभी का लक्ष्य एक था—भारतीय समाज को संगठित, न्यायपूर्ण, और समरस बनाना।

गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, ग्राम स्वराज और नैतिक आत्मबल को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानाय अम्बेडकर ने तर्क, शिक्षा, संगठन और संवैधानिक अधिकारों के माध्यम से शोषण के विरुद्ध संघर्ष का मार्ग सुझायाय वहीं दीनदयाल उपाध्याय ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समन्वय से युक्त एकात्म दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति को पुनः जागृत करने का प्रयत्न किया।

शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि इन तीनों विचारधाराओं को परस्पर विरोध के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इन्हें भारतीय समाज की विविध चुनौतियों के उत्तर के रूप में एक समग्र दृष्टिकोण में समाहित किया जा सकता है। जहाँ गांधीवाद सामाजिक आचरण को नैतिकता से जोड़ता है, अम्बेडकरवाद सामाजिक न्याय की व्यावहारिक जमीन तैयार करता है, वहीं एकात्म मानववाद सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं राष्ट्र की चेतना का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज जब भारतीय समाज पुनः जातीय संघर्ष, सांस्कृतिक विभाजन और सामाजिक विषमता से जूझ रहा है, तब इन तीनों वैचारिक धाराओं का समन्वयात्मक प्रयोग एक वैकल्पिक राष्ट्रीय दर्शन की आवश्यकता को पूर्ण कर सकता है। इस शोध का निष्कर्ष यही है कि समावेशी, न्यायपूर्ण और समरस समाज के निर्माण के लिए गांधी, अम्बेडकर और उपाध्याय के विचारों को संवाद, समन्वय और सामंजस्य की भावना के साथ पुनर्परिभाषित करना होगा।

## संदर्भ सूची (References)

गांधी, मोहनदास करमचन्द (1927)। हिंद स्वराज। नवजीवन प्रकाशन मंडल, अहमदाबाद।

गांधी, मोहनदास करमचन्द (1941)। सत्य के प्रयोग। नवजीवन प्रकाशन मंडल।

गोखले, बालकृष्ण (2010)। भारतीय राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय। प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

चंद्र, विपिन (2004)। भारत का स्वतंत्रता संग्राम। वाणी प्रकाशन।

झा, रामानुज (2015)। भारतीय दर्शन और राजनीति। राजकमल प्रकाशन।

तिवारी, अशोक कुमार (2012)। भारतीय राजनीतिक विचारक। यूनिवर्सिटी बुक हाउस।

दुबे, श्यामसुंदर (2008)। भारतीय समाजः संरचना एवं परिवर्तन। रावत पब्लिकेशन।

नाग, मोहन (2016)। एकात्म मानववादः सिद्धांत और व्यवहार। भारतीय विचार मंच, नागपुर।

पात्रा, संतोष (2019)। दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन। नमन प्रकाशन, भोपाल।

बंधोपाध्याय, मृणाल (2002)। भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय। ओरिएंट ब्लैकस्वान।

प्रसाद, यशवंत (2020)। गांधी, अम्बेडकर और आधुनिक भारत। ओमेगा पब्लिकेशन।

मिश्रा, शंकर (2017)। राजनीतिक समाजशास्त्र के आयाम। अर्घ्य प्रकाशन।

मेहता, प्रभात कुमार (2011)। आधुनिक भारत में सामाजिक विचारधारा। विश्वविद्यालय प्रकाशन।

सिंह, हरिओम (2013)। भारतीय सामाजिक आंदोलनों का इतिहास। राजपाल एंड सन्स।

यादव, जितेन्द्र (2021)। जाति, धर्म और राजनीति। भारत बुक डिपो।